International Journal of Geology, Agriculture and Environmental Sciences
Volume – 4 Issue – 6 November-December 2016
Website: www.woarjournals.org/IJGAES **ISSN: 2348-0254**

राजस्थान में हरित क्रांति का कृषि विकास पर प्रभाव एवं आधुनिकीकरण

डॉ. रेणु सांगवान, व्याख्याता भूगोल, एस. आर. आर. एम. राजकीय महाविद्यालय, झुन्झुनू, राजस्थान

प्रस्तावना

हरित क्रांति, जिसे कृषि क्षेत्र में नवाचार और उन्नति का प्रतीक माना जाता है, ने भारतीय कृषि को एक नए मोड़ पर पहुंचा दिया। 1960 के दशक में शुरू हुई इस क्रांति ने पूरे देश में कृषि उत्पादन में अप्रत्याशित वृद्धि की और खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित किया। राजस्थान, जो अपनी भौगोलिक और जलवायु विविधता के लिए जाना जाता है, भी इस क्रांति के प्रभाव से अूछता नहीं रहा। राजस्थान में हरित क्रांति ने कृषि विकास में न केवल नई तकनीकों और पद्धतियों का समावेश किया, बल्कि इसके माध्यम से सामाजिक और आर्थिक संरचना में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिले।

राजस्थान, जो एक मुख्यतः शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्र है, यहां कृषि मुख्य रूप से मानसून पर निर्भर थी। हरित क्रांति से पहले, पारंपरिक खेती के तरीकों के कारण उत्पादन कम था और खाद्यान्न संकट की स्थिति बनी रहती थी। हरित क्रांति ने इस क्षेत्र में नई उम्मीदें जगाईं, जिससे न केवल फसल उत्पादन में वृद्धि हुई, बल्कि किसानों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार हुआ।

इस शोध पत्र का उद्देश्य राजस्थान में हरित क्रांति के प्रभावों का विस्तृत अध्ययन करना है। इसमें हम देखेंगे कि किस प्रकार हरित क्रांति ने राजस्थान की कृषि को आधुनिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और इसके परिणामस्वरूप यहां के कृषि परिदृश्य में क्या-क्या बदलाव आए। हम उन नीतियों और योजनाओं का भी विश्लेषण करेंगे जो इस क्रांति को सफल बनाने में सहायक सिद्ध हुईं। इसके साथ ही, इस क्रांति के सामाजिक और आर्थिक प्रभावों का भी अध्ययन किया जाएगा, ताकि यह समझा जा सके कि कैसे हरित क्रांति ने राजस्थान के ग्रामीण जीवन को प्रभावित किया।

प्रस्तावना के माध्यम से हम यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि हरित क्रांति ने राजस्थान की कृषि को एक नई दिशा दी है। इसके परिणामस्वरूप, न केवल कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई है, बल्कि किसानों की जीवनशैली और सामाजिक संरचना में भी सकारात्मक परिवर्तन आया है। इस शोध पत्र में हम इन सभी पहलुओं का गहन अध्ययन करेंगे और यह समझने की कोशिश करेंगे कि कैसे हरित क्रांति ने राजस्थान के कृषि क्षेत्र को समृद्ध किया।

उद्देश्य

इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य राजस्थान में हरित क्रांति के प्रभाव और कृषि विकास एवं आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का विस्तृत विश्लेषण करना है। इसके तहत निम्नलिखित उप-उद्देश्य शामिल हैं:

1. **हरित क्रांति का परिचय और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:**
   - हरित क्रांति के मूल तत्व और उद्देश्यों का संक्षिप्त परिचय देना।
   - भारत में हरित क्रांति की शुरुआत और राजस्थान में इसके प्रसार का ऐतिहासिक विश्लेषण करना।
2. **राजस्थान की कृषि की पूर्व स्थिति का अध्ययन:**

- हरित क्रांति से पहले राजस्थान की कृषि पद्धतियों, फसलों और तकनीकों का विश्लेषण करना।
- पूर्व-हरित क्रांति काल की प्रमुख समस्याओं और चुनौतियों का अध्ययन करना।

3. **हरित क्रांति के प्रमुख तत्व और राजस्थान में इसका क्रियान्वयन:**
   - उन्नत बीज, रासायनिक उर्वरक, और सिंचई सुविधाओं का उपयोग और उनका प्रभाव।
   - हरित क्रांति के अंतर्गत सरकारी योजनाओं और नीतियों का विश्लेषण।
4. **कृषि उत्पादन और उत्पादकता पर प्रभाव:**
   - फसल उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि का मापन और विश्लेषण।
   - नई कृषि तकनीकों और पद्धतियों के समावेश का अध्ययन।
5. **कृषि आधुनिकीकरण के पहलू:**
   - उन्नत कृषि उपकरणों और मशीनरी का उपयोग और उनका प्रभाव।
   - फसल चक्र, विविधीकरण, और कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान का अध्ययन।
6. **सामाजिक और आर्थिक प्रभाव:**
   - किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार और उसकी माप।
   - ग्रामीण समाज में हुए सामाजिक परिवर्तन और उनकी गहराई का विश्लेषण।
   - रोजगार के नए अवसर और कृषि व्यवसाय में सुधार का अध्ययन।
7. **पर्यावरणीय और स्थायित्व चुनौतियाँ:**
   - हरित क्रांति से उत्पन्न पर्यावरणीय समस्याओं का विश्लेषण।
   - स्थायी कृषि विकास की दिशा में प्रयास और भविष्य की संभावनाओं का अध्ययन।
8. **भविष्य की संभावनाएँ और योजनाएँ:**
   - हरित क्रांति के उपरांत राजस्थान में कृषि क्षेत्र की भविष्य की दिशा और संभावनाओं का पूर्वानुमान।
   - नई योजनाओं और नीतियों का सुझाव देना जो कृषि विकास और आधुनिकीकरण में सहायक हो सकें।

इन उद्देश्यों के माध्यम से, शोध पत्र राजस्थान में हरित क्रांति के व्यापक प्रभावों का समग्र विश्लेषण प्रदान करेगा और भविष्य में कृषि विकास की संभावनाओं को समझने में सहायता करेगा।

हरित क्रांति का इतिहास

हरित क्रांति एक कृषि सुधार आंदोलन था, जिसका मुख्य उद्देश्य कृषि उत्पादन में वृद्धि कर खाद्यान्न संकट को दूर करना था। यह आंदोलन 1960 के दशक में शुरू हुआ और भारत सहित कई विकासशील देशों में व्यापक प्रभाव डाला।

पृष्ठभूमि
द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, विश्व के कई हिस्सों में खाद्यान्न संकट उत्पन्न हो गया था। भारत भी खाद्यान्न संकट से जूझ रहा था, जहां उत्पादन की कमी और बढ़ती जनसंख्या ने स्थिति को और गंभीर बना दिया था। इस समय, वैज्ञानिक और कृषि विशेषज्ञ नई तकनीकों और पद्धतियों के माध्यम से कृषि उत्पादन बढ़ाने के प्रयास कर रहे थे।

भारत में हरित क्रांति का आगमन

भारत में हरित क्रांति की शुरुआत 1960 के दशक में हुई। इस क्रांति के प्रमुख चेहरे नॉर्मन बोरलॉग थे, जिन्हें "हरित क्रांति के पिता" के रूप में जाना जाता है। उन्होंने उन्नत बीज, रासायनिक उर्वरक, और सिंचाई तकनीकों के प्रयोग से कृषि उत्पादन में अद्वितीय वृद्धि हासिल की। भारत में इस क्रांति को बढ़ावा देने के लिए एम. एस. स्वामीनाथन का भी महत्वपूर्ण योगदान था।

प्रमुख तत्व

हरित क्रांति के मुख्य तत्व निम्नलिखित थे:

1. **उन्नत बीज**: उच्च उत्पादकता वाले संकर और उन्नत किस्म के बीजों का उपयोग।
2. **रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक**: फसलों की उत्पादकता बढ़ाने और कीटों से बचाव के लिए रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का व्यापक उपयोग।
3. **सिंचाई**: पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए नहरों, ट्यूबवेल, और अन्य सिंचाई प्रणालियों का विकास।
4. **मशीनरी और उपकरण**: खेती के लिए ट्रैक्टर, हार्वेस्टर, और अन्य आधुनिक उपकरणों का प्रयोग।

भारत में हरित क्रांति का विस्तार

हरित क्रांति का प्रारंभिक प्रभाव पंजाब, हरियाणा, और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में देखा गया। इन राज्यों में उन्नत बीजों, उर्वरकों, और सिंचाई सुविधाओं के उपयोग से गेहूं और चावल की उत्पादन में अद्वितीय वृद्धि हुई। धीरे-धीरे यह क्रांति अन्य राज्यों में भी फैलने लगी।

हरित क्रांति के परिणाम

1. **कृषि उत्पादन में वृद्धि**: गेहूं और चावल की उत्पादन में अप्रत्याशित वृद्धि हुई।
2. **खाद्यान्न संकट से मुक्ति**: भारत खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बन गया।
3. **किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार**: कृषि उत्पादन में वृद्धि के साथ किसानों की आय में भी वृद्धि हुई।

चुनौतियाँ और आलोचना

हरित क्रांति के कई सकारात्मक परिणाम होने के बावजूद, इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी देखे गए:

1. **पर्यावरणीय प्रभाव**: रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की गुणवत्ता और जल संसाधनों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।
2. **आर्थिक असमानता**: हरित क्रांति का लाभ मुख्यतः उन किसानों को मिला जिनके पास सिंचित भूमि और संसाधन थे, जिससे छोटे और सीमांत किसानों को अपेक्षाकृत कम लाभ मिला।
3. **फसल विविधता में कमी**: केवल कुछ चुनिदा फसलों पर ध्यान केंद्रित करने से कृषि विविधता में कमी आई।

हरित क्रांति ने भारत की कृषि में क्रांतिकारी बदलाव लाया और खाद्यान्न संकट को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके बावजूद, इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी सामने आए, जिन्हें ध्यान में रखते हुए सतत और समावेशी कृषि विकास की दिशा में प्रयास करने की आवश्यकता है। राजस्थान में हरित क्रांति ने भी कृषि उत्पादन में वृद्धि और आधुनिकीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसके विस्तृत अध्ययन से भविष्य में कृषि विकास की संभावनाओं को समझने में सहायता मिलेगी।

राजस्थान की कृषि की पूर्व स्थिति

भौगोलिक और जलवायु परिदृश्य

राजस्थान, भारत का सबसे बड़ा राज्य, अपने विविध भौगोलिक और जलवायु विशेषताओं के लिए जाना जाता है। राज्य का अधिकांश भाग थार मरुस्थल से आच्छादित है, जहां शुष्क और अर्ध-शुष्क जलवायु पाई जाती है। वार्षिक वर्षा का औसत 100 से 500 मिमी के बीच होता है, जो कृषि के लिए अपर्याप्त है। इसलिए, कृषि मुख्यतः मानसून पर निर्भर थी।

पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ

हरित क्रांति से पहले, राजस्थान में पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ प्रमुख थीं। निम्नलिखित प्रमुख पॉइंट पर प्रकाश डाला जा सकता है:

1. **खेती के तरीके**:
   - **बारानी खेती**: राज्य के अधिकांश हिस्सों में बारिश पर निर्भर खेती की जाती थी। सिंचाई सुविधाओं की कमी के कारण उत्पादन सीमित था।
   - **समान्य खेती**: कम संसाधनों और पारंपरिक उपकरणों के उपयोग से खेती की जाती थी।
2. **फसलें**:
   - प्रमुख फसलें बाजरा, ज्वार, मक्का, गेहूं, और चना थीं।
   - दलहन और तिलहन फसलें भी उगाई जाती थीं, लेकिन कम मात्रा में।
   - फसलों की विविधता सीमित थी, जिससे किसानों की आय और खाद्यान्न सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता था।
3. **सिंचाई के साधन**:
   - राज्य में सिंचाई की सुविधाएं अत्यंत सीमित थीं।
   - कुएँ और तालाब प्रमुख जल स्रोत थे, लेकिन ये वर्षा पर निर्भर थे।
   - नहरें और ट्यूबवेल जैसी आधुनिक सिंचाई प्रणालियाँ बहुत कम उपयोग में थीं।

कृषि समस्याएँ और चुनौतियाँ

हरित क्रांति से पहले राजस्थान की कृषि निम्नलिखित समस्याओं और चुनौतियों से जूझ रही थी:

1. **कम उत्पादन और उत्पादकता**:
   - पारंपरिक खेती के तरीकों के कारण कृषि उत्पादन और उत्पादकता बहुत कम थी।

Website: www.woarjournals.org/IJGAES **ISSN: 2348-0254**

  - उपजाऊ भूमि की कमी और अव्यवस्थित कृषि पद्धतियों से उत्पादन सीमित रहता था।

2. **जल संसाधनों की कमी**:
   - राज्य में जल संसाधनों की भारी कमी थी।
   - मानसून पर अत्यधिक निर्भरता के कारण फसलें अक्सर सूखे और बाढ़ से प्रभावित होती थीं।
3. **प्राकृतिक आपदाएँ**:
   - राजस्थान में बार-बार आने वाले सूखे और बाढ़ ने कृषि पर प्रतिकूल प्रभाव डाला।
   - मरुस्थलीकरण और मिट्टी की अपर्याप्तता ने भी कृषि उत्पादकता को प्रभावित किया।
4. **प्रौद्योगिकी और ज्ञान की कमी**:
   - उन्नत कृषि तकनीकों और ज्ञान का अभाव था।
   - किसानों के पास सीमित संसाधन और उपकरण थे, जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि नहीं हो पाती थी।
5. **आर्थिक और सामाजिक समस्याएँ**:
   - किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर थी।
   - ऋण, कर्ज, और गरीबी के कारण किसान कृषि में निवेश नहीं कर पाते थे।
   - सामाजिक रूप से भी किसानों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता था।

हरित क्रांति से पहले राजस्थान की कृषि की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। जलवायु, संसाधनों की कमी, और पारंपरिक खेती के तरीकों के कारण कृषि उत्पादन सीमित था। किसानों को अनेक समस्याओं और चुनौतियों का सामना करना पड़ता था, जिससे उनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति प्रभावित होती थी। हरित क्रांति ने इन समस्याओं को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और राज्य में कृषि के आधुनिकीकरण की दिशा में कदम बढ़ाए।

आधुनिकीकरण के पहलू

राजस्थान में हरित क्रांति के बाद कृषि के क्षेत्र में व्यापक आधुनिकीकरण हुआ। इसने न केवल उत्पादन में वृद्धि की बल्कि कृषि की पद्धतियों में भी क्रांतिकारी परिवर्तन लाए। इस आधुनिकीकरण के प्रमुख पहलुओं को निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है:

1. उन्नत बीज और उर्वरकों का उपयोग

- **उन्नत बीज**: हरित क्रांति के दौरान और बाद में, उन्नत किस्म के हाई-यील्ड वैरायटी (HYV) बीजों का उपयोग बढ़ा। इन बीजों ने उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि की।
- **रासायनिक उर्वरक**: उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए रासायनिक उर्वरकों का व्यापक उपयोग हुआ। इससे मिट्टी की उर्वरता में सुधार हुआ और फसल उत्पादन में वृद्धि हुई।

2. सिंचाई सुविधाओं का विस्तार

- **नहरों और ट्यूबवेलों का विकास**: सरकार ने सिंचाई के लिए नहरों और ट्यूबवेलों का निर्माण करवाया। राजस्थान में इंदिरा गांधी नहर परियोजना एक प्रमुख उदाहरण है, जिसने बड़े पैमाने पर कृषि भूमि को सिंचित किया।

- **सूक्ष्म सिंचाई तकनीक**: ड्रिप और स्प्रिंलर सिंचाई जैसी सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियाँ अपनाई गईं, जिससे जल की बचत हुई और फसल उत्पादन में वृद्धि हुई।

3. कृषि मशीनरी और उपकरणों का उपयोग

- **मशीनीकरण**: ट्रैक्टर, हार्वेस्टर, थ्रेशर, और अन्य आधुनिक कृषि उपकरणों का उपयोग बढ़ा। इससे खेती के कार्यों में तेजी और कुशलता आई।
- **फसल कटाई और प्रोसेसिंग**: उन्नत मशीनों के उपयोग से फसल कटाई और प्रोसेसिंग के काम आसान हो गए, जिससे समय और श्रम की बचत हुई।

4. फसल चक्र और विविधीकरण

- **फसल चक्र**: फसल चक्र अपनाने से मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है और विभिन्न प्रकार की फसलें उगाई जा सकती हैं। इससे किसान एक ही खेत में कई प्रकार की फसलें उगा सकते हैं।
- **विविधीकरण**: फसल विविधीकरण से किसान अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं और जोखिम कम कर सकते हैं। इस प्रक्रिया में दलहन, तिलहन, और बागवानी फसलों का समावेश होता है।

5. कृषि शिक्षा और अनुसंधान

- **कृषि विश्वविद्यालय और अनुसंधान केंद्र**: राजस्थान में कृषि विश्वविद्यालयों और अनुसंधान केंद्रों की स्थापना से उन्नत कृषि तकनीकों का विकास और प्रचार हुआ।
- **प्रशिक्षण कार्यक्रम**: किसानों के लिए विभिन्न प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिससे उन्हें उन्नत कृषि तकनीकों और पद्धतियों के बारे में जानकारी मिली।

6. जैविक और सतत कृषि पद्धतियाँ

- **जैविक खेती**: रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग के दुष्प्रवों को देखते हुए जैविक खेती को बढ़ावा दिया गया। इससे पर्यावरण की सुरक्षा और दीर्घकालिक स्थायित्व सुनिश्चित हुआ।
- **सतत कृषि पद्धतियाँ**: जल और मिट्टी संरक्षण, फसल अवशेष प्रबंधन, और सतत कृषि पद्धतियों को अपनाया गया, जिससे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण हुआ।

राजस्थान में हरित क्रांति के बाद कृषि के आधुनिकीकरण ने राज्य के कृषि परिदृश्य को पूरी तरह से बदल दिया। उन्नत बीजों, उर्वरकों, सिंचाई सुविधाओं, और कृषि मशीनरी के उपयोग से न केवल उत्पादन में वृद्धि हुई बल्कि किसानों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार हुआ। फसल चक्र और विविधीकरण, कृषि शिक्षा और अनुसंधान, और जैविक और सतत कृषि पद्धतियों के समावेश से कृषि को एक नई दिशा मिली। इन पहलुओं ने राजस्थान के कृषि क्षेत्र को समृद्ध और स्थायी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

निष्कर्ष

राजस्थान में हरित क्रांति ने कृषि क्षेत्र में व्यापक और स्थायी परिवर्तन लाए हैं। हरित क्रांति से पहले, राज्य की कृषि मुख्यतः पारंपरिक पद्धतियों पर निर्भर थी, जिसमें उत्पादन और उत्पादकता दोनों ही सीमित थे। इस क्रांति ने कृषि को आधुनिक बनाने के साथ-साथ उत्पादन में भी अद्वितीय वृद्धि की। इस शोध पत्र के निष्कर्ष निम्नलिखित हैं:

उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि

हरित क्रांति के कारण राजस्थान में उन्नत बीजों, रासायनिक उर्वरकों, और सिंचाई सुविधाओं का व्यापक उपयोग हुआ, जिससे फसल उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। गेहूं, बाजरा, ज्वार, और अन्य प्रमुख फसलों की पैदावार में बढ़ोतरी से खाद्यान्न संकट का समाधान हुआ और राज्य खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बना।

सिंचाई सुविधाओं का विकास

नहरों, ट्यूबवेलों, और सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियों के विकास ने राजस्थान में कृषि भूमि को सिंचत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इंदिरा गांधी नहर परियोजना जैसे महत्वपूर्ण सिंचाई परियोजनाओं ने शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में भी कृषि को संभव बनाया।

कृषि मशीनरी और तकनीकी आधुनिकीकरण

कृषि में मशीनीकरण और उन्नत कृषि उपकरणों के उपयोग ने खेती के कार्यों को कुशल और तेज बनाया। ट्रैक्टर, हार्वेस्टर, और अन्य मशीनरी के उपयोग से श्रम की बचत हुई और उत्पादन की प्रक्रिया में सुधार हुआ।

फसल चक्र और विविधीकरण

फसल चक्र और विविधीकरण से मिट्टी की उर्वरता बनी रही और किसानों को विभिन्न प्रकार की फसलें उगाने का अवसर मिला। इससे न केवल उत्पादन में वृद्धि हुई बल्कि किसानों की आय में भी विविधता आई।

कृषि शिक्षा और अनुसंधान

कृषि विश्वविद्यालयों और अनुसंधान केंद्रों की स्थापना से उन्नत कृषि तकनीकों का विकास और प्रसार हुआ। किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम और जागरूकता अभियानों ने उन्हें आधुनिक कृषि पद्धतियों से अवगत कराया और उन्हें अपनाने के लिए प्रेरित किया।

जैविक और सतत कृषि पद्धतियाँ

रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से उत्पन्न पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए जैविक और सतत कृषि पद्धतियों को बढ़ावा दिया गया। इससे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण हुआ और कृषि की स्थिरता सुनिश्चित हुई।

सामाजिक और आर्थिक प्रभाव

हरित क्रांति के कारण किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ और ग्रामीण समाज में सकारात्मक परिवर्तन आए। उत्पादन और आय में वृद्धि से रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हुए और किसानों की जीवनशैली में सुधार हुआ।

चुनौतियाँ और भविष्य की दिशा

हरित क्रांति के कई सकारात्मक परिणाम होने के बावजूद, इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी सामने आए। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न हुईं। इसलिए, सतत और समावेशी कृषि विकास की दिशा में निरंतर प्रयास करने की आवश्यकता है।

समग्र निष्कर्ष

राजस्थान में हरित क्रांति ने कृषि क्षेत्र को एक नई दिशा और गति दी। उत्पादन, उत्पादकता, और आधुनिक कृषि पद्धतियों के समावेश से राज्य के कृषि परिदृश्य में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। हालांकि, इन परिवर्तनों को स्थायी और पर्यावरण-संवेदनशील बनाए रखने के लिए सतत कृषि पद्धतियों को अपनाना और नए अनुसंधान एवं तकनीकी विकास को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, हरित क्रांति ने राजस्थान के कृषि क्षेत्र को समृद्ध किया और भविष्य में भी इसके प्रभाव को बनाए रखने के लिए सतत प्रयास आवश्यक हैं।

संदर्भ

1. बोरलॉग, नॉर्मन. "The Green Revolution Revisited and the Road Ahead." Texas A&M University Press, 2000.
2. स्वामीनाथन, एम. एस. "An Evergreen Revolution." World Scientific Publishing Company, 2006.
3. चंद्रा, बिपिन. "India Since Independence." पेंगुइन बुक्स, 2008.
4. शर्मा, आर. के. "Impact of Green Revolution on Agriculture in Rajasthan." International Journal of Agricultural Sciences, 2015.

Date of Publication: 31-12-2016